कामचोर टिड्डा

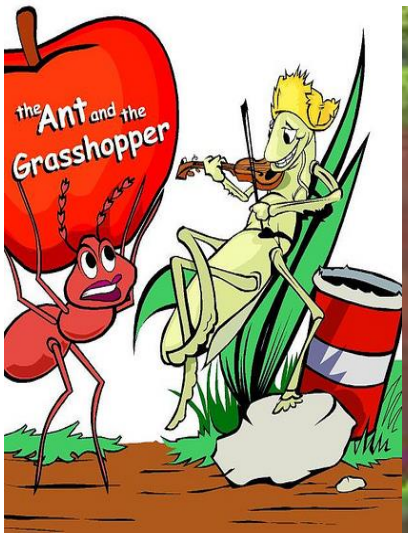

सर्दी का मौसम था। कड़ाके की ठण्ड पड़ रही थी। एक टिड्डा भूख से व्याकुल हो रहा था। उसे कहीं से कुछ भी खाने को नहीं मिला। इसलिये वह चींटी के पास जाकर कहने लगा, 'मुझे बहुत भूख लगी है। मेरे पास खाने को कुछ भी नहीं है। तुमने तो अपने पास खाने का बहुत–सा सामान इकट्ठा कर रखा है। क्या उसमें से कुछ तुम मुझे खाने को दे सकती हो?'

'अवश्य ही मेरे पास खाने का बहुत–सा सामान है,' चींटी ने कहा। 'मैंने गर्मी के मौसम में खूब मेहनत से यह सामान इकट्ठा किया है, जिससे कि सर्दी के मौसम में मैं आराम से बैठकर खा सकूँ। जब मैं काम में लगी थी, उस समय तुम क्या करते रहे?'

'बात यह है कि सूर्य की उस सुन्दर चमकती धूप में मेरा मन इतना प्रसन्न हो गया कि मैं पूरी गर्मी के मौसम में एक जगह बैठकर खूब गाता रहा,' टिड्डे ने कहा।

'तुम गीत गाते रहे,' चींटी ने कहा, 'तुम काम मत करो, केवल मौज में गाते रहो। खाने की तो तुम्हें कोई आवश्यकता ही नहीं है। केवल गानों से क्या होगा, अब साथ में नाचो भी।'

"आगे आने वाले समय की चिन्ता अभी करो।"

अभ्यास कार्य

नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर अनुच्छेद की मदद से लिखिए–

प्र.1 कौन–सा मौसम चल रहा था ?

.....

प्र. 2 कौन भूख से व्याकुल हो रहा था ? (चींटी / टिड्डा)

प्र. 3 किसके पास खाने का बहुत–सा सामान था ?

.....

प्र. 4 किसने बहुत मेहनत से सामान इकट्ठा किया था ?

.....

प्र. 5 कौन गर्मी के मौसम में गाता रहा ?

.....

प्र. 6 इस कहानी से हमें क्या सबक मिलता है ?

.....

प्र. 7शब्दों को शुद्ध करके लिखो–

गमी :– .....

चीट :– .....

सदी :– .....

मोज :– .....

टिडडा :– .....

रवीन्द्र कुमार वर्मा
पी.आर.टी.
के.वि. अनन्तनाग